ख्वाहिशें.., अधूरी सी...!!

तुमने देखा तो सही,
भले ही कशिश के बिना।
ग़र कशिश न दिखी,
तो पैग़ाम कहाँ से लाऊ.?
एक चुन्नट सी उड़ी तुम्हारे बदन से,
लगा, पहाड़ो ने मुकां पा लिया है।
ग़र झीलों ने रोका है, पानी अपना..,
बस तेरे आँखों की जुस्तजु हो चली है।
कुछ कह न सके लबो से अपनी,
मुस्कानों ने ओठों को दबाया है।
कमनीय को देख न सके हम,
तराश की बलिहारी है।
मैले हुए जाते है, मेरे अरमाँ,
साँसों ने करीब से गरमाहट को सुना है।
ग़र काफ़िर भी बन सके हम,
मंज़िले भी अफ़ज़ाई है।
शौक़ ए मोहब्बत भी रंग गया हमे,

किसी रंगरेज़ ने पकिया लगाईं है।

तेरी काया जिस्म से फ़ना हो सके,

ऐसी फितरतो ने क़यामत लायी है।

तेरे बोल भी उड़े फ़िज़ा में,

इश्क़ ने भी मतलबो की कसमें खायी है।

बस, ये जुस्तजु भी लेते जाओ,

किसी क़ायनात को देख,

किसी दीवाने की हम-सफ़री का,

ईश्तकबाल सहेज लेना।

न जाने किस मुकां.., किस मंज़िल..,

कोई बे-ग़ैर बैठा